चतुर्थ अध्याय

शेव्हे के उपन्यासों का शिल्पवैधानिक विकास

चतुर्थ अध्याय

शेवडे के उपन्यासोंका शिल्पवैधानिक विकास

(य) प्रास्ताविक --

उपन्यास एक कला है। हर कला के नियम होते हैं। जीवन और कला के योग के बिना श्रेष्ठ औपन्यासिक कृति का निर्माण संभव ही नहीं है। जीवन और कला के समन्वय के लिए उपन्यास के तत्वोंका कलात्मक संयोजन होने की आवश्यकता होती है। उपन्यास के तत्वों की विवेचना में हेनरी हडसन का निम्नलिखित कथन द्रष्टव्य है -- ' सभी प्रकार की कथात्मक रचना के प्रमुख तत्व - कथावस्तु, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, देशकाल वातावरण, भाषाशैली और जीवन दर्शन तथा उद्देश्य की अभिव्यक्ति है।' उपन्यास के ये तत्व सर्वमान्य हो चुके हैं। शताब्दी की अपनी विकास यात्रा में हिन्दी उपन्यास का शिल्प विकसित हो चुका है। आज वह नये से नये शिल्प प्रयोगों को धारण करने में समर्थ हुआ है। हिन्दी उपन्यास के शैशव काल में कथानक ही सबकुछ था। उस समय कथानक को प्रस्तुत करने का वर्णनात्मक ढंग प्रचलित था। धीरे धीरे उपन्यासकारने कथा कहने का भार पाठकोंपर सौंप दिया और आत्मकथात्मक शैली का विकास हुआ। आगे चलकर पूर्व दीप्ति शैली में कम से कम समय में संपूर्ण जीवन को प्रस्तुत किया जाने लगा। प्रारंभिक काल में मानव चरित्र के उद्घाटन पर कोई ध्यान नहीं दिया गया था। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से चरित्र चित्रण तथा उसके उद्घाटन को क्रमशः महत्व प्राप्त होता गया। शैशव अवस्था में उपन्यास के पात्र दृढसंकल्प वाले तथा बहिर्मुखी होते थे तो आजकल मनोवैज्ञानिकता के आधारपर उपन्यासों के पात्र आत्मकेन्द्रित और सत्वहीन नजर आते हैं। हिन्दी उपन्यास

की भाषा ने भी उत्तरोत्तर विकास किया है। आरंभिक उपन्यासोंकी भाषा बोलचाल के निकट, मुहावरेदार एवं देशज शब्दों से युक्त होती थी। आगेचलकर भाषा संबंधी नये नये प्रयोग हुये। फलस्वरुप आज कल भाषा में व्यंजकता, काव्यात्मकता, सरलता, सुबोधता आदि गुण आ गये हैं। देशकालवातावरण का तत्व तो प्रारंभिक युग में नगण्य सा था । आधुनिक युग में इस तत्व का समावेश विशेष रुप से दिखाई देता है। स्थानिय रंगोंका चित्रण ही अपेक्षाकृत अधिक मिलने लगा है। उपन्यास का उद्देश्य तत्व आरंभिक काल में मनोरंजन और उपदेशात्मकता तक ही सीमित था। आगे चलकर इस तत्व में व्यापकता आयी नजर आती है। नीतिशिक्षा, कौतुहलसृष्टि, सुधारभावना, हास्यसृष्टि, समस्याचित्रण, राजनीतिक चित्रण, जीवन दर्शन, व्यक्ति के आन्तर्बाह्य स्थिति का संघर्ष तथा आँचल विशेष क्षेत्र का चित्रण आदि का प्रकटीकरण करना उपन्यास का उद्देश्य हो गया है। उद्देश्य तत्व के क्षेत्र में अधिक जागरुकता तथा परिधि में व्यापकता आ गयी है। प्रारंभिक काल में उपन्यास के शीर्षक को महत्व ही नहीं था। इसलिये शीर्षक को अनिवार्य तत्व नहीं माना गया था। मगर आज कल शीर्षक को भी उपन्यास का एक अनिवार्य तत्व माना जाता है। शीर्षक एक ऐसा केन्द्र बिन्दु है जिसके इर्द-गिर्द उपन्यास के सभी तत्व रहते हैं। सार्थक, संक्षिप्त, आकर्षक तथा आशयपूर्ण शीर्षक उपन्यास के यशस्वीता का द्योतक होता है। कुलमिलाकर प्रारंभिक काल से आजतक नये नये प्रयोग और उपलब्धियों के कारण हिन्दी उपन्यास के तत्वों का विकास ही होता आया है। शिल्प विधि के दृष्टिसे हिन्दी उपन्यास आज चरम सीमा पर पहुँच चुका है। शेवडे जी के उपन्यासों का शिल्पवैधानिक विकास का अध्ययन इन्हीं आधारों पर करना हमारा लक्ष्य है।

(२) <u>शेवडे के उपन्यासों में कथावस्तु का विकास</u> --

उपन्यासों में कथावस्तु का उतना ही महत्व होता है, जितना की शरीर में आत्मा का। इसलिये कथावस्तु को उपन्यास का मूल आधार या ढाँचा